Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
ISSN: 2454-8367
Vol. 2, Issue-IV
April 2017
e-ISJN: A4372-3118

भारत की आजादी में सिक्खों का योगदान (1900–1947)

डॉ. रामरतन साहू
विभाग अध्यक्ष (इतिहास)
डॉ.सी.वी रामन् विश्वविद्यालय
करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

गुरबिंदर कौर
एम.फिल. शोधार्थी
डॉ.सी.वी रामन् विश्वविद्यालय
करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सिक्ख इतिहास की तरफ देखें तो ऐसा प्रतीत होता है कि सिक्ख इतिहास कुर्बानियों की एक बेमिसाल श्रेणी है। सिक्ख धर्म में शहीदी का बहुत ऊचा स्थान है। सिक्ख गुरू साहिबानों ने समर्पण भाव को बढ़ाते हुए शहीदी परंपरा को गौरान्वित किया। भक्ति के साथ निडरता पूर्वक जीवन जीने का हौसला दिया। जालिम के जुल्म का मुकवला शातामयी ढंग और तलवार के जोर से अपने आपको और देश को बचाने में सिक्खों का योगदान अद्विितीय है। चाहे सिक्ख धर्म की आयु कम है लेकिन देश के लिए दी गई कुर्बानीयाँ बहुत है।

प्रस्तावनाः–

इतिहास अपने आप में एक ऐसा सम्पूर्ण लफ्ज है। जो ''गागर में सागर'' की तरह अपने आप में बहुत कुछ संभाल कर बैठा होता है। अपने पुरखों द्वारा किए गए महान् कामों को एक पीढ़ी से दुसरी पीढ़ी और अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का काम इतिहास करता है। इतिहासकारों का मत है जो कौम अपने इतिहास को भुल जाती है, उसका पतन होना शुरू हो जाता है। इतिहास कौम की पूँजी होता है। सिक्ख कौम गुरूओं भक्तों शुरवीरों और शहीदों की कौम है। सिक्खों को अपने इतिहास पर गर्व है।

भारत में चाहे सिक्खों की आबादी यहाँ की कुल आबादी का दो प्रतिशत भी नहीं है, पर देश की स्वतंत्रता के लिये सिक्खों की कुर्बानियॉं 90 फीसदी से ऊपर है। सिक्ख भारत में आटे में नमक बराबर भी नहीं है, लेकिन सिक्खों की कुर्बानियों का उल्लेख किये बिना देश की स्वतंत्रता का इतिहास नहीं लिखा जा सकता सिक्ख कौम का इतिहास बताता है, कि इन्होंने देश को विदेशी हमलावरों से स्वतंत्र करवाने और देश–वासीओं को ऊँच–नीच, छुआछुत तथा बेकार के कर्म–काण्डों की आत्याधिक गुलामी से मुक्त कराने के लिए अपना बहुमुल्य योगदान दिया है।

सिक्ख कौम आत्म–सम्मान की परिभाषा है, क्यों कि यह कौम संघर्ष की कोख में जन्मा–संघर्ष अपने आत्म सम्मान तथा सभी को रस्ता दिखाने के लिए, यह धर्म सशस्त्र क्रांति का संदेश वाहक है। जो उस समय प्रकट हुआ जिस समय तलवार की नोंक पर आम आदमी का आत्म सम्मान टांगा जा रहा था। गुरू नानक देव जी ने जनता में जागृति पैदा की। उन्होंने बाबर को ''जाबर'' कहा और उसकी हुकुमत को ''बुच्चडों'' की हुकुमत

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
ISSN: 2454-8367
Vol. 2, Issue-IV
April 2017
e-ISJN: A4372-3118

कहा। नतीजे के तौर पर उनको बाबर की कैद में चक्कियॉं पिसनी पड़ी, लेकिन उन्होनें देश वासिओं को स्वतंत्रता का एहसास करवाया। साथ ही स्वतंत्र सेनानियों की कौम की नींव रखी। जिसके फलस्वरूप पाँचवें गुरू अर्जन देव जी ने देश की स्वतंत्रता के लिए वेदी पर अपनी शहीदी दी। उनके बाद के नवम् गुरू तेग बहादुर जी और उनके सिक्ख भाई मतीदास, भाई सतीदास, भाई दयाला जी को भी उस समय शहीद कर दिया गया। इसी श्रृंखला को आगे चलाते हुए, श्री गुरू गोबिंद सिंह ने अपना सारा परिवार देश धर्म के लिए कुर्बान कर दिया। उनके बाद पूरी की पूरी सिक्ख कौम उनके दिखाए हुए मार्ग पर चलती रही। सिक्खों की धरती पंजाब ही देश भर में वो हिस्सा है, जो कि सिक्खों ने सारा देश गुलाम हो जाने पर भी 1849 ई. तक अंग्रेजों से बचाए रखा था।

1849 में सिक्खों ने अंग्रेजों के साथ भारत स्वतंत्रता की आखरी लड़ाई लड़ी थी। इस लड़ाई में एक ओर केवल सिक्ख रैजीमैंट थी और दूसरी ओर अंग्रेजी के साथ भारत की रैजीमैंटो, गोरखों और गढ़वालियों की फौजे थी। नतीजे पर सिक्खों की हार हुई और सम्पूर्ण भारत अंग्रेजी राज में मिला दिया गया।

अंग्रेजों के विरूद्ध शान्तमयी आंदोलन सबसे पहले 1868 में एक सिक्ख महापुरूष राम सिंह जी ने आंरभ किया था। आप ने अंग्रेजी जुबान लिवास, अंग्रेजी सरकार की नौकरियों, अंग्रेजी सरकारी अदालतों, डाकखानों आदि का बाईकार करने का आंदोलन चलाया, लेकिन उनका यह आंदोलन कुछ कारणों से सफल न हो सका।

1907 में सरदार अजीत सिंह (शहीद भगत सिंह के चाचा) ने ''पगड़ी सम्भल जट्टा'' की चेतावनी देकर देश के स्वतंत्रता सेनानीयों को जगाया जागृत किया और अंग्रेज सरकार को खुला चैलेंज दिया पर हालात ठीक न होने के कारण अपने दूसरे साथियों लाल हरिदयाल और राम बिहारी बोस के साथ देश के बाहर निकल गए और कैलेफोनियॉं में हैंड क्वाटर रख कर भारत की स्वाधीनता की लहर चलाने लगे। अमेरिका और कनाड़ा के सिक्खों ने ''गदर पत्रिका'' नामक अखबार शुरू किया और विदेशों में रहते सिक्खों ने देश की स्वतंत्रता के लिए प्रेरित करने का काम आंरभ कर दिया। इस साल कानाड़ा में ''बाबर आकाली लहर'' और कैलेकोरिनिया में गदर पार्टी का संगठन किया।

1914 में बाब गुरदित्ता सिंह जी कामागाटामारू जहाज में विदेशों में बसते हुए देश भक्त भारतीयों को भारत लेकर आ रहे थे, लेकिन बजबज घाट आने से पहले ही सत्ता को इस की खबर मिल गई। बिटिश सरकार ने 29 दिसम्बर 1914 को कामागाटामारू के कुल 376 यात्रियों में 355 सिक्ख थे। इसमें से 50 सिक्खों को शहीद कर दिया और बाकी यात्रीयों को बंदी बना लिया। जब यह खबर विदेशों में पहुँची तो वहां पर बसे सिक्खों का गुस्सा भड़क गया। 170 सिक्खों का एक संगठन 24 अक्टुबर 1914 को भारत पहुँचा लेकिन यहॉं पर पहुँचते ही उनको गिरफ्तार कर लिया गया। उनको मिन्टगुमरी और मुल्तान जेल में बंद कर दिया गया।

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
ISSN: 2454-8367
Vol. 2, Issue-IV
April 2017
e-ISJN: A4372-3118

मार्च 1915 तक 3125 सिक्ख दुनियॉ भर के अलग–अलग देशों से पंजाब आ पहुॅचे और इसने स्वतंत्रता की लहर काफी तेज कर दी।

1915–16 में करतार सिंह सराना ने भारतीय फौजियों के दिलों में देश में स्वाधीनता का जजबा बनाए रखने के लिए एक कार्यक्रम बनाया लेकिन यह सफल न हो सका। 14 नवम्बर 1917 को 12 सिक्ख साथियों समेत उनको फांसी की सजा दी गयी।

अप्रैल 1919 को बैसाखी वाले दिन जलियॉवाला बाग खुनी काण्ड हुआ, जिसमें शहीद होने वाले देश भक्तों में 1300 में 769 केवल सिक्ख सुरवीर ही थे। (खुरावंत सिंह) जलियाँवाला बाग में जरनल डायर की गोलियों का शिकार हुए। उन निहत्थे और मासूम लोगो का बदला भी एक सिक्ख सरदार उधम सिंह ने कातिल के घर इंग्लैण्ड में जाकर उसे पुरे इक्ससी सालों बाद मार कर अपना पुराना बदला चुकाया।

देश की स्वतंत्रता के लिए गाँधी जी ने देश को शांतिमयी ढंग से आंदोलन चलाने को कहा। यह बात 1918 की है, लेकिन सवाल यह था कि इस आंदोलन को कौन प्रारंभ करे? अन्ततः पहली 1919 की वैसाखी और जलियाँवाला बाग में और फिर? अगस्त 1921 में जिरोल आकाली झण्डे के नीचे 'गुरू का बाग' का मोर्चा प्रांरभ करके सिक्ख सुरवीरो ने इस आंदोलन को आरंभ किया।

1922 में सिक्खो ने 'बब्बर आकाली लहर' के गठन कर के बब्बरों ने अपनी गतिविधियों से अंग्रेज सम्राज्य को काफी नुकसान पहुँचाया। गुरूदारा लहर (1921–28) वास्तव में देश स्वतंत्रता आंदोलन का ही आंरभ था। इस आंदोलन की देश के प्रमुख नेताओं ने स्वीकार किया है–

''मैं प्रणाम करता हूॅ अकालियों को जिन्होंने देश की अजादी के लिए आंदोलन प्रारंभ किया और आजादी के लिये लड़ रहे हैं।''–(पंडित मोती लाल लेहरू)

''गुरू का बाग में से ही देश स्वतंत्रता की लहर उठी है और अब इसी ने ही देश को स्वतंत्र कराना है।'' – (पंडित मदन मोहन मालवीय)

''सिक्ख भाईयों ने हमें देश–स्वतंत्रता की प्राप्ति का नुस्खा सिखा दिया है। अब दुनियाँ की कोई भी ताकत हमें ज्यादा देर तक गुलाम नहीं रख सकती।''– (डॉ. सैफूदीन किचलू)

''जिस देश के पास सिक्खों जैसी शहीदों की कौम मौजुद हो, वह देश ज्यादा देर तक गुलाम नहीं रह सकता।'' – (पट्टा भाई सीता रामईया)

पंडित मदन मोहन मालवीय तो सिक्खों की कथनी और करनी से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने हिन्दुओं को इस बात के लिए प्रेरित किया, कि अगर विदेशी हुकुमत की गुलामी से मुक्त होना चाहते हैं, तो फिर हर हिन्दु घर में कम से कम अपना एक पुत्र सिक्ख बनाना चाहिए।

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
ISSN: 2454-8367
Vol. 2, Issue-IV
April 2017
e-ISJN: A4372-3118

गुरूद्वारा श्री तरन–तारन साहिब के पहले शहीद हजारा सिंह की तीर गाथा सुन कर गांधी जी गुरूद्वारा आजाद होने पर आकाली दल को तार भेजी किः–

''मुझे देश आजाद करवाने का नुस्खा मिल गया, गुरूदारा अजाद हो गया, मुबारक हो, अब देश भी आपको ही आजाद करवाना है।''– (एम.के. गांधी) चाबियों के मोर्चे की सफलता पर गांधी जी ने अकाली दल को जनवरी 1922 में दी थी–

''देश स्वतंत्रता की पहली लड़ाई जीत ली गई हैं मैं सिक्ख कौम को बधाई देता हूँ। – (एम.के गाँधी)

– (अकाली आंदोलन के गुप्त पत्र) गाँधी जी के यह दोनों ही तारे कांग्रेस और आकाली दल के रिकार्ड में मौजूद हैं।

1930 के गाँधी जी के असहयोग में भी बलिदान देने में सिक्ख कौम किसी कौम से पीछ नहीं थी। 1931 में जब स्वतंत्रता सेनानिओं को अण्डमान लेकर जा रहे थे। तो सरदार रतन सिंह और उसके कुछ सिक्ख साथियों ने बहुत सारे अंग्रेज अफसरों को मार कर देश की आजादी के लिए अपनी तीव्र भावनाओं को प्रकट किया था। भले ही बाद में इन सिक्खों को इस की भारी कीमत आपनी जाने कुर्बान कर दे देनी पड़ी थी।

सरदार भगत सिंह जो कि हिन्दुस्तान की आजादी के लिये हँसते–हँसते तख्ते पर चढ़ गया। ऐसे शुरवीरों की कुर्बानी का वर्णन बिना भारत का स्वतंत्रता का इतिहास नहीं लिखा जा सकता। 1942–1943 की किवट इण्डिया लहर के संबंध में भारत में जो अंग्रेजो ने गिरफ्तारियॉं की उसमें 3 चौथाई संख्या सिक्खों की थी। 1946 में बम्बई नेवी के जवानों के विद्रोह में भी सिक्ख सैनिक किसी से कम नहीं थे। आजदी की लड़ाई में सिक्खों और गैर–सिक्खों की ओर से की गई कुबानियों के ऑकड़े एक चार्ट की शक्ल में दिये गए। इन ऑकड़ों की पृष्टि मौलना आजाद ने की हुई है जिसकी पुष्टि **''भारत की आजादी में शिक्खो का योगदान– शिक्ख मिशनरी कालेज, लुधियाना पव्लिकेशन''** द्वारा की है जो कि इस प्रकार हैः–

क.नं.	**जो सजा मिली**	**सिक्ख**	**गैर सिक्ख**	**कुल**	
1.	फॉसी मिल	93	28	125	
2.	उमर कैद	2147	499	2646	
3.	जलियॉवाले बाग में शहीद	799	501	1300	
4.	कुका लहर में शहीद	41	–	91	
5.	बजबज धार	67	47	113	
6.	अकाली लहर		500	–	500
	कुल जोड़	3697	1074	4771	

स्रोतः **भारत की आजादी में शिक्खो का योगदान– शिक्ख मिशनरी कालेज, लुधियाना पव्लिकेशन**

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
ISSN: 2454-8367
Vol. 2, Issue-IV
April 2017
e-ISJN: A4372-3118

हम कह सकते है स्वतंत्रता संग्राम का एक भी ऐसा पक्ष नहीं था जिसमें की सिक्खों ने भाग न लिया हो। सिक्खों की देश के खातिर की गई कुर्बानियाँ हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों जातियों की कुर्बानीयों के मिल कर कहीं अधिक है। सिक्खों की जनसंख्या भारत की कुल संख्या का मात्र 2 प्रतिशत है, फिर भी उन्होंने देश के लिए जो किया है वो अतुलनीय है। फांसी पर चढ़ने से लेकर काला पानी की सजा मरने तक सिक्खों की संख्या अति अधिक है। सरदार अजीत सिंह ने महान इन्कलावी गीत 'पगड़ी सम्भाल जट्टा' के द्वारा हुए हिन्द को जगाया। भारत की आजादी का इतिहास सिक्खों के द्वारा किये गए कार्य जिसमें कि प्रमुख नामधारी लहर, बब्बर आकाली लहर, अजाद हिन्द फोज की बागवत रशियग और फ्रैंच रेवुलुशन से कम नहीं थी।

निष्कर्ष–

इस प्रकार हम देखते है कि पांचवे गुरू अर्जन देव जी ने जुल्म के आगे झुकने की बजाए स्वाभिमान सहित कुर्बानी देकर आम लोगों को जुल्म का मुकाबला करने का जो मार्ग बताया उसी पर चलो सिक्खों ने रण भूमि में ही नहीं बल्कि आम लोगों के मनो में भी इन्कलाब लेकर आये है। सिक्खों ने जुल्म का विरोध करने से लेकर देश प्रेम पैदा करने तक अपने देश के लिये जीने और मरने के लिये आम लोगों के अंदर उस जुल्म का मुकाबला करने का साहस पैदा किया। देश को स्वतंत्रत कराने के लिये अनेक सिक्खों ने स्वतंत्रता आदोलन में भाग लिया था। सरदार अजीत सिंह, सरदार शहीद भगत सिंह, करतार सिंह सराभा, बाबा सोहन सिंह भाकना, बाबा गुरदित्ता सिंह आदि अनेक ऐसे सिक्ख थे। जिन्होंने हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये अपनी कुर्बानिया दी। ऐसे शुरबीरों के बलिदानों का वर्णन किये बिना देश की स्वतंत्रता का इतिहास नहीं लिखा जा सकता। भारत में सिक्ख समुदाय निर्दोश होते हुए भी अनेकों बार अंग्रेजों के हिंसक सुंघर्ष के शिकार हुए कामागाटा मारु और जलियांवाला बाग नरसंहार इसके प्रमुख उदाहरण है। वाल्ट व्हमैन के अनुसार मैं उन सभी महान आत्माओं को देख रहा हूॅ जो कि किसी भी देश में अच्छे काम के लिये शहीद हुई चाहे बीज कम है मगर कोई भी फिकर नहीं क्योंकि इन शहीदों की फसल कभी भी समाप्त होने वाली नहीं है।

संदर्भ–

1. ''भारत की आजादी'' में सिक्खों का योगदान प्रकाशन सिक्ख मिशनरी कॉलेज।
2. खुशवंत सिंह ''सिक्खों का इतिहास'', खंड द्वितीय।
3. Singh punam, 2010 Anecdotes from sikh history.
4. Singh kartar, stories from Sikh History.
5. Singh Sangat, The Sikhs In History.
6. मारू जॉनसन ह्यूग जेएम, की यात्राः 1979 सिक्ख चैलेंज कनाडा के रंगीन पट्टी करने के लिए। दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।
7. कुमार हरीश पुरी, ''गदर आंदोलन'', प्रकाशन गुरूनानक देव विश्वविद्यालय
8. गुरूचरण सिंह, 1993 ''बब्बर अकाली आंदोलन'', एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण, गुरूचरण सिंह, प्रकाशन अमन
9. रामईया सीता भाई पट्टा, हिस्ट्री आफ इंडीयन नेशनल कांग्रेस

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
ISSN: 2454-8367
Vol. 2, Issue-IV
April 2017
e-ISJN: A4372-3118

10. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास भाग–4, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली
11. शुक्ला आर.एल., आधुनिक भारत
12. मारू जॉनसन ह्यूग जेएम, की यात्रा : 1979 सिक्ख चैलेंज कनाडा के रंगीन पट्टी करने के लिए। दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।
13. कुमार हरीश पुरी, ''गदर आंदोलन'', प्रकाशन गुरूनानक देव विश्वविद्यालय
14. गुरूचरण सिंह, 1993 ''बब्बर अकाली आंदोलन'', एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण, गुरूचरण सिंह, प्रकाशन अमन
15. ''भारत की आजादी'' में सिक्खों का योगदान प्रकाशन सिक्ख मिशनरी कॉलेज।
16. खुशवंत सिंह ''सिक्खों का इतिहास'', खंड द्वितीय।
17. वर्मा एम.आर. 2013–2014, भारत का इतिहास।
18. सिंह नम्रता, 2009, मध्यकालीन भारत में नगरीकरण।
19. शर्मा, हरिशचंद, राकेश काला, 2009 भारत का राजनीतिक एवं संवैधानिक इतिहास।
20. वासु डी. दास, इण्डिया अर्डर द बिट्रिश क्राउन।
21. मेमन वी.पी., ट्रांसफर पावर इन इंण्डिया।
22. केन, कन्टीन्युशनल हिस्ट्री।
23. राय, एम.पी., इण्डियन पॉल्टीक्स एण्ड द गवर्नमेंट।
24. दत्त, के.के, इण्डियन मार्च टू फ्रिडम।
25. मित्तल, ए.के., इतिहास।
26. लक्षमण सिंह, आधुनिक भारतीय समाजिक और राजनीतिक विचारधारा।
27. सिंह, गिरिश कुमार, 2012– आधुनिक भारत का समाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास।
28. ग्रोवर, बी.एल. आधुनिक भारत का इतिहास।
29. शर्मा, एल.पी. हिस्ट्री ऑफ मॉडल इंडिया।
30. Chandra, Bipan India's Struggle for Independence.
31. Keay John,india: A history.
32. Singh punam, 2010 Anecdotes from sikh history.
33. Singh kartar, stories from Sikh History.
34. Singh Sangat, The Sikhs In History.